मैना द्वारा प्रकाशित
नवम्बर 2005 • रु. 25

हैल्थ

ट्रीशन

दवा को कहें अलविदा!

हाई ब्लडप्रेशर, डायबिटीज, कोलेस्ट्रॉल आदि पर काबू- 'नैचुरल थेरेपी' से!

क्या होमियोपैथिक दवाएं वाकई कारगर नहीं हैं?

एक खोजपूर्ण रिपोर्ट!

खास लेख!

अपनी जन्मकुंडली देखकर जानें; किस पैथी से ठीक होगी बीमारी?

ब्यूटी फूड्स...

त्वचा और बालों की सेहत व खूबसूरती के लिए!

मस्तिष्क और शरीर दोनों को करती रिलैक्स-

योग-निद्रा!

पुरुषों के लिए विशेष!

एक नया जोशो-खरोश सिर्फ 4 हफ्तों में!

नई सेक्सरसाइज!

ज्योतिष और स्वास्थ्य!

(पार्ट - 2)

डॉ. पीयूष सक्सेना

अक्टूबर अंक में प्रकाशित मेरे लेख 'ज्योतिष और स्वास्थ्य' पर पाठकों ने जो उत्साहजनक प्रतिक्रिया दी, वह मेरी उम्मीद से भी परे थी। मुझे एक वर्ष पूर्व नवम्बर 2004 की घटना याद आ रही है। इस पत्रिका के सम्पादक श्री संतोष प्यासी जी को मैं अपने प्रयोगों के बारे में बता रहा था। एक राष्ट्रीय स्तर की पत्रिका का सम्पादक होने के नाते उनका यह सोचना स्वाभाविक था कि किसी संतुष्टिपूर्ण अध्ययन और तथ्यों के अभाव में मेरे लेखों को कैसे छापा जाए? तब मेरी पीएच.डी. पूरी नहीं हुई थी। मेरे पास अगर कोई सबूत था तो मेरी, मेरे परिवार के सदस्यों एवं मित्रों की पैथॉलाजिकल रिपोर्ट्स, जो मेरी आजमाई इलाज पद्धति के दमदार होने का दावा कर रही थीं। रिपोर्टों को देखकर प्यासी जी आश्वस्त हुए कि अल्टरनेटिव थेरेपीज चमत्कार दिखा सकती हैं! बहरहाल, अब तो सारा दृश्य ही बदल चुका है। पाठकों के पत्र और फोन काल्स का जो तांता लगा है सो थमने का नाम ही नहीं ले रहा। मुझे मेरी पद्धति आप सभी तक पहुंचाने का सौभाग्य मिला, इसके लिए मैं 'हैल्थ...' का आभारी हूं।

पिछले अंक में आपने ज्योतिष की भूमिका, इतिहास एवं ज्योतिष का संक्षिप्त परिचय पढ़ा। और मुझे खुशी है कि इस आदि-विज्ञान को एक नए नजरिए के साथ पेश करने की मेरी कोशिश आप सभी को पसंद आई। अब इस अंक में हमारी चर्चा का विषय है, ज्योतिष से स्वास्थ्य लाभ कैसे उठायें? ज्योतिष एक गंभीर और सागर जैसा अथाह विषय है। इस पर चंद पन्नों में विस्तारपूर्वक चर्चा करना सम्भव तो नहीं है, पर ज्योतिष और स्वास्थ्य के कुछ रोचक व आवश्यक पहलुओं की यथासंभव इस लेख में चर्चा जरूर की जायेगी।

अपनी जन्म-कुंडली से जानें, किस पैथी से ठीक होगी बीमारी!

विद्या कोई भी हो, अगर उसका लाभ उठाना है, तो उसके बारे में कुछ मूलभूत जानकारी अवश्य होनी चाहिए। तो आइए सबसे पहले जानें कि जन्म पत्री है क्या? यह सारा ब्रह्मांड गतिशील है ब्रह्मांड के सभी तारों, ग्रहों, उपग्रहों एवं अन्य पिंडों की किरणें पृथ्वी के किसी भी स्थान पर अलग-अलग अनुपात और सम्मिश्रण (कॉम्बिनेशन) के साथ पड़ती हैं। किसी भी क्षण, किसी भी स्थान पर इन किरणों का अलग-अलग प्रभाव होता है। यही कारण है कि एक ही समय में अलग-अलग जगहों पर जन्मे लोगों की जन्मकुंडली अलग-अलग बनती है। कुंडली या जन्मपत्री को जन्मचक्र या map of the heavens या nativity या natal chart भी कहते हैं, जिसे आजकल जन्मकुंडली के कम्प्यूटर साफ्टवेयर से निकाला जा सकता है और इस तरह बनी जन्मपत्री उस जन्म समय के लिए सही होती है।

कुंडली बनवाते समय आपको अपना जन्मदिन, माह, वर्ष, समय व जन्म स्थान बताना होगा। श्रीपति पद्धति व लहरी/चित्रापक्षीय अयनांश से बनी कुंडली कम्प्यूटर से निकाल दी जायेगी। यदि आपको रमन, कृष्णमूर्ति अयनांश की कुंडली चाहिए, तो बता दें या वेस्टर्न पद्धति का जन्मचक्र चाहिए तो भी बता दें। ग्रहों की डिग्री में थोड़ा-सा फर्क आ सकता है।

जब व्यक्ति पैदा होता है उस समय ठीक पूर्व (east) दिशा में जो राशि होती है (जैसे- वृश्चिक), उसे लग्न या ascendant या प्रथम भाव कहते हैं। उसी समय पश्चिम में जो राशि होगी उसे सातवां भाव या descendant (वृष) कहेंगे। सिर के ऊपर जो राशि होगी वह दसवां भाव या zenith (सिंह) कहलायेगा तथा पैरों के नीचे- धरती के पार पाताल की ओर जो राशि होगी उसे चौथा भाव या nadir (कुम्भ) कहेंगे। लग्न से nadir के बीच दूसरा भाव (धनु) - तीसरा भाव (मकर); चौथे भाव से सातवें भाव के बीच पंचम (मीन) व छठा भाव (मेष); सातवें से दसवें के बीच आठवां (मिथुन), नौवां भाव (कर्क) व दसवें से लग्न के बीच ग्यारहवें (कन्या) व बारहवें भाव (तुला) होते हैं। यानी आकाश में राशि चक्र पश्चिम से पूर्व की ओर बढ़ते क्रम में पाया जाता है तथा पाताल में पूर्व से पश्चिम के क्रम में जाते हुए एक वलय (stele/zodiac) बनाता है।

किसी भी जन्म चक्र में लग्न (पूर्व दिशा में उग रहे राशि-नक्षत्र) चन्द्रमा व सूर्य क्रमशः शरीर, मन और प्राण के कारक होते हैं। स्वास्थ्य के बारे में जानने के लिए इन तीनों का साथ-साथ अध्ययन किया जाता है। यदि सूर्य खराब राशि भाव में स्थित है, खराब ग्रह के साथ है या सूर्य पर किसी बुरे ग्रह की दृष्टि है तो व्यक्ति की जीवनी शक्ति के संचार में रुकावट आती है। यदि चन्द्रमा अपनी राशि, भाव स्थिति और क्रूर ग्रह के साथ या दृष्टि के कारण पीड़ित है तो मानसिक दबाव के चलते शरीर में तरल पदार्थों के संचार में बाधा आती है। इससे अलग-अलग तरह के रोग कभी भी उभर सकते हैं।

लग्न के पीड़ित होने पर शरीर पर सीधा दुष्प्रभाव पड़ता है। यदि पीड़ादायक ग्रह भारी है तो कोई गंभीर स्वास्थ्य समस्या भी आ सकती है। कब? यह विंशोत्तरी दशा-भुक्ति, गोचर/ transits व प्रोग्रेशन देखकर बताया जा सकता है- समस्या का प्रकार व दिन तक बताया जा सकता है, यदि आपके पास अपना सही जन्म-विवरण है तो...।

इस तरह बनती है जन्म कुंडली

आजकल कुंडली बनाने के लिए एफिमेरीज (Ephimeris) का उपयोग करना चाहिए। यह पंचांग का आधुनिक रूप है। इसमें स्थान विशेष के तिथि वार, नक्षत्र, योग, करण, ग्रह गति, ग्रहों की वार्षिक स्पष्ट स्थिति, नवांश आदि विवरण दिए होते हैं। जन्म के समय उक्त बारह भावों में स्थित राशियों के अंतर्गत सारे ग्रह स्थित होते हैं। चूंकि सारे ग्रह सूर्य, चन्द्र, बुध, शुक्र, मंगल, बृहस्पति, शनि, यूरेनस, नेप्च्यून व प्लूटो अपनी भिन्न-भिन्न गति के अनुसार आकाशीय राशि पथ पर गतिमान रहते हैं, इसलिए प्रत्येक जन्मचक्र में इनकी स्थिति अलग-अलग होती है। जन्म के समय ग्रहों की इन्हीं अलग-अलग स्थितियों (placement) के कारण हर व्यक्ति का भविष्य विश्लेषण दूसरे व्यक्ति के भविष्य विश्लेषण से भिन्न पाया जाता है। उदाहरण हेतु 19.11.2005 की प्रातः 05.30 बजे मुम्बई में जन्मे शिशु के जन्मचक्र में भावों व ग्रहों की स्थिति अंशों, राशियों व नक्षत्रों की स्थिति निम्न चार्ट से समझी जा सकती है। इसमें कृष्णमूर्ति अयनांश का उपयोग किया गया है। भाव (house) निकालने के लिए टेबल ऑफ हाउसेज का प्रयोग करते हैं। जन्म का समय 5.30 प्रातः से आगे पीछे होने पर समयानुसार ग्रहों की स्थिति का समायोजन करते हैं। इसी प्रकार जन्म स्थान में फर्क होने पर अक्षांश देशान्तर का समायोजन करते हैं।

।। लग्न कुण्डली ।।

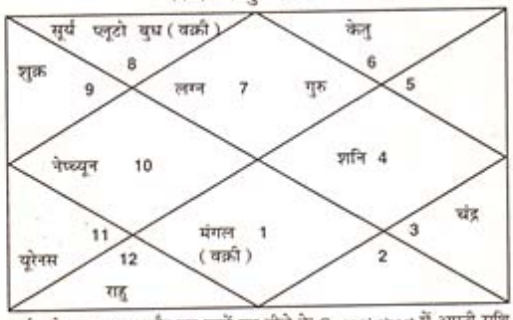

सूर्य, यूरेनस, चन्द्रमा और गुरु चारों ग्रह नीचे के Cuspal chart में अपनी राशि से पहले भाव में आ गए हैं। गहराई में जाने पर सही भविष्यवाणी का आधार नीचे का चार्ट ही होगा।

एफिमेरीज के अनुसार दिनांक 19 नवंबर से 22 नवंबर 2005 तक, सुबह 5.30 बजे मुम्बई में ग्रह-स्थिति इस प्रकार होगी-

दिनांक	सूर्य	चंद्र	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	यूरेनस	नेप्च्यून	प्लूटो	राहु
19/11/2005	02Sco55	08Gem25	15Sco13R	18Sag57	17Ari26R	11Lib18	17Can27	13Aqu00	21Cap08	29Sco29	17Pis26R
राशि	(वृश्चिक)	(मिथुन)	(वृश्चिक)	(धनु)	(मेष)	(तुला)	(कर्क)	(कुम्भ)	(मकर)	(वृश्चिक)	(मीन)
20/11/2005	03Sco55	20Gem52	14Sco20	19Sag49	17Ari09	11Lib3D	17Can27	13 Aqu01	21Cap09	29Sco31	17Pis23
21/11/2005	04Sco56	03Gem04	13Sco18	20Sag40	16Ari53	11Lib43	17Can28	13 Aqu01	21Cap10	29Sco33	17Pis20
22/11/2005	05Sco56	15Can04	12Sco08	21Sag30	16Ari38	11Lib56	17Can28R	13 Aqu01	21Cap11	29Sco35	17Pis17

ध्यान दें कि तीन दिन की यात्रा में सभी ग्रह चल रहे हैं। प्लूटो सबसे धीमा और चन्द्रमा सबसे तेज, जो कि 22 नवम्बर को मिथुन (Gemini) राशि से कर्क (Cancer) राशि में आ पहुंचा है। इस चार्ट में बुध और मंगल वक्री हैं। उल्लेखनीय है कि सूर्य और चन्द्रमा हमेशा मार्गी (Direct) होते हैं। राहु, केतु हमेशा वक्री (Retrograde) होते हैं।

भाव House	अंश Degree	किस राशि में	किस नक्षत्र में	इस भाव में स्थित ग्रह	ग्रहों का अंश	ग्रह की राशि	ग्रह का नक्षत्र
I / लग्न (पहला)	14°29'	तुला ♎	स्वाति	सूर्य	2°55'	वृश्चिक	विशाखा
II / दूसरा	13°42'	वृश्चिक ♏	अनुराधा	बुध (वक्री) प्लूटो	15°13' 29°29'	वृश्चिक वृश्चिक	अनुराधा ज्येष्ठा
III / तीसरा	13°58'	धनु ♐	पूर्वाषाढ़ा	शुक्र	18°57'	धनु	पूर्वाषाढ़ा
IV / चौथा	14°42'	मकर ♑	श्रवण	नेप्च्यून यूरेनस	21°08' 13°00'	मकर कुम्भ	श्रवण शतभिषा
V / पांचवां	16°30'	कुम्भ ♒	शतभिषा	-	-	-	-
VI / छठा	17°01'	मीन ♓	रेवती	राहु	17°26'	मीन	रेवती
VII / सातवां	14°29'	मेष ♈	भरणी	मंगल (वक्री)	17°26'	मेष	भरणी
VIII / आठवां	13°42'	वृष ♉	रोहिणी	चन्द्र	8°25'	मिथुन	आर्द्रा
IX / नौवां	13° 38'	मिथुन ♊	आर्द्रा	-	-	-	-
X / दसवां	14°42'	कर्क ♋	पुष्य	शनि	17°17'	कर्क	अश्लेषा
XI / ग्यारहवां	16°30'	सिंह ♌	पूर्वाफाल्गुनी	-	-	-	-
XII / बारहवां	17°01'	कन्या ♍	हस्त	केतु बृहस्पति	17°26' 11°18'	कन्या तुला	हस्त स्वाति

कुंडली से अंग और रोगों का ज्ञान

अब आइये, यह जानें कि किसी व्यक्ति की जन्मकुंडली के द्वारा अंगों व रोगों की संभावनाओं का ज्ञान कैसे किया जाता है। ध्यान दें, किस तरह कुंडली के 12 भाव और 12 राशियां क्रमशः संपूर्ण शरीर को प्रभावित करते हैं। संक्षेप में इन्हें यूं समझें:

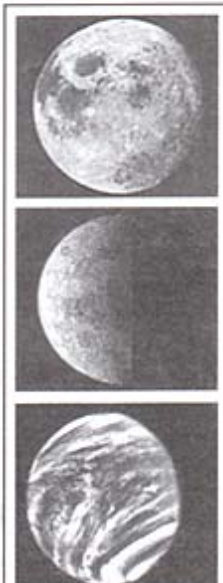

• **लग्न यानी पहला भाव / मेष राशि :** सिर, मुंह में स्थित सारे अंग-अवयव इसी भाव के अंतर्गत आते हैं। दांत, मसूड़े; नर्वस सिस्टम, वर्टिगो (ऊंचाई से डरना) आदि समस्याएं पता चलती हैं।

• **दूसरा भाव / वृष राशि :** गला/गर्दन सम्बन्धी समस्या; स्पांडिलाइटिस, सूजन, घाव, डिफ्थीरिया, टांसिल्स की समस्या, दाहिनी आंख की स्थिति को बताता है।

• **तीसरा भाव / मिथुन राशि :** त्वचा की तकलीफें, सीना, फेफड़ा सम्बन्धी समस्याएं, जैसे- टीबी, ब्रोंकाइटिस, अस्थमा; नर्वस सिस्टम, कुछ हद तक हृदय रोग, बांहों की समस्या दर्शाता है।

• **चौथा भाव / कर्क राशि :** पेट व पाचन तन्त्र। इससे अपच, अजीर्ण, अस्थमा, खांसी, कब्ज, बांयी आंख की समस्या; प्लूरिसी, ड्राप्सी, पाचन संबंधी तकलीफें आदि और कभी-कभी पेट के कैंसर के संकेत मिलते हैं।

• **पांचवां भाव / सिंह राशि :** हृदय, पीठ, दायीं आंख की स्थिति को बताता है, हृदय विकार, बुखार, जॉन्डिस, ब्लडप्रेशर का असंतुलन व पैन्क्रियाज भी इसी श्रेणी में आता है। पैंक्रियाज के खराब होने से डायबिटीज जैसे भयंकर रोग होते हैं।

• **छठा भाव / कन्या राशि :** आमाशय, आंतें, लिवर, पाचन तन्त्र इसी के तहत आते हैं। लिवर की खराबी, आमाशय, आंतों की समस्या, कब्ज, कालरा, आंतों की टीबी, कैंसर आदि को दर्शाता है।

• **सातवां भाव / तुला राशि :** किडनी, पेशाब की थैली, स्त्रियों में बच्चेदानी, ओवरी आदि इससे संबंधित हैं। अस्वस्थ राशि से इन अंगों सम्बन्धी सामान्य या भारी रोग सम्भव है, जो कि दूषित करने वाले ग्रह की शक्ति पर निर्भर करेगा। कमर की हड्डी में तकलीफ भी इसी वर्ग में आयेगी।

• **आठवां भाव / वृश्चिक राशि :** गुप्तांग। भगंदर, किडनी स्टोन, यौन रोग, स्त्रियों में बच्चेदानी व योनि मार्ग के रोग, पाइल्स, रक्त का दूषित होना आदि तकलीफें इस भाव से पता चलती हैं।

• **नौवां भाव / धनु राशि :** जांघें व नितम्ब सम्बन्धी समस्याएं। रोग का प्रकार प्रभावित करने वाले ग्रह पर निर्भर करेगा; जैसे- शनि-मंगल का प्रकोप है तो दुर्घटना में जांघ टूट सकती है।

• **दसवां भाव / मकर राशि :** घुटने, गठिया या गाउट, घुटने पर चोट आदि इस भाव की सामान्य समस्यायें हैं।

• **ग्यारहवां भाव / कुम्भ राशि :** घुटने के नीचे का भाग, जो पैर के पंजे के ऊपर तक है; उस पर इस भाव का अधिकार है। भाव दूषित होने पर फोड़े, फुंसी, चोट, फ्रैक्चर आदि हो सकते हैं। पर इस राशि का एक और लक्षण है रक्त का दूषित होना; दमा और ठंडक से उत्पन्न रोग। बायीं बांह व कान सम्बन्धी समस्याएं भी इससे पता चलती हैं।

• **बारहवां भाव / मीन राशि :** पांव (फूट), बायीं आंख की समस्या; गाऊट, फोड़े-फुंसी, नमी से होने वाला फंगल इन्फेक्शन आदि।

ग्रहों के कारण उत्पन्न समस्याओं के संकेत

• प्लूटो : व्यक्ति में संपूर्ण परिवर्तन लाने के चक्कर में भारी समस्यायें खड़ा कर सकता है। यह पूरे हालात को बिगाड़ देता है।

• नेप्च्यून : कुप्रभावित होने पर दुख की भावना, गम्भीर मनोरोग, कब्ज की प्रवृत्ति पैदा करता है। व्यक्ति सच्चाई से परे कल्पना को ही सच मानने लगता है। नशे की लत भी इसी ग्रह के कारण पड़ती है।

• यूरेनस : लाइलाज व असामान्य समस्या देता है, जिससे एकाएक और असाधारण दुर्घटनायें घट सकती हैं। तन्त्रिका तन्त्र यानी सेन्ट्रल नर्वस सिस्टम प्रभावित हो सकता है।

• शनि : ठंडक संबंधी तकलीफें, शरीर में द्रवों का कमजोर संचार, रुकावट, अपच, अजीर्ण, हड्डी और जोड़ों की समस्यायें; वात रोग व तमाम लाइलाज रोग देता है, जो आजीवन साथ नहीं छोड़ते।

• बृहस्पति : रक्त व लीवर की समस्याएं।

• मंगल : मांसपेशियां, शक्ति, एनर्जी, स्वभाव के असंतुलन के कारण होने वाली दुर्घटनाएं; चोट-चपेट, खासतौर पर सिर में चोट; खून का बहना।

• सूर्य : खराब स्थिति होने पर हृदय, दायीं आंख, पीठ का दर्द आदि।

• शुक्र : प्रजनन तन्त्र, गला, किडनी, त्वचा और सुन्दरता प्रभावित होते हैं।

• बुध : नर्वस सिस्टम, मानसिक समस्यायें, तत्कालिक वातावरण आदि प्रभावित होते हैं। व्यक्ति सही तरह से विचारों का आदान-प्रदान नहीं कर पाता।

• चन्द्र : ड्रॉप्सी, अपच (विटामिन 'बी' की कमी), पेट और संवेदना संबंधी समस्याएं, मानसिक समस्याएं आदि। महिलाओं में मासिक धर्म और उससे सम्बन्धित समस्याएं, गर्भधारण और उससे सम्बंधित समस्याओं का कारक भी होता है।

राहु एवं केतु स्वतन्त्र रूप से फल नहीं देते, पर इन पर जिस ग्रह की नजर है या ये जिस ग्रह के साथ हैं उसका फल देते हैं।

• राहु : सांसारिक उपलब्धियों हेतु चुम्बक का कार्य करता है। यदि अच्छे स्थान पर अच्छे ग्रह के साथ है,तो पद, प्रतिष्ठा, धन खींचकर लाता है। चौथे, आठवें, बारहवें भाव में हो तो यह दुख-तकलीफ दे सकता है। जैसे - बीमारी, अस्पताल में भर्ती होना, जेल की सजा होना। इसके अलावा सिंड्रोम, डर, उलझन और डिप्रेशन का कारक राहु हो सकता है। पांचवे, ग्यारहवें भाव में यह गर्भ नष्ट होने का कारण बनता है।

• केतु : सांसारिक तौर पर यह दु:खों का सहज कारक है। यह गिरावट या पतन का भी सूचक है। यह पांचवें भाव में होने पर गर्भपात / गर्भस्राव दे सकता है। यह बच्चों में प्राइमरी कॉम्पलेक्स और किसी भी उम्र में टी.बी., प्लूरिसी जैसी समस्याओं का कारक

बनता है। इससे सड़ने, गलने की स्थितियों का भी पता चलता है। अमूमन यह अच्छी खासी योजनाओं को फ्लॉप कर देता है, जिससे अन्त में सारे सांसारिक प्रयास बेकार हो जाते हैं। इसकी प्रवृत्ति आध्यात्मिक है और आध्यात्मिक उत्थान के लिए यह शुभ ग्रह है। जो लोग त्याग करके भोग करते हैं उनके लिए यह सांसारिक सफलता भी देता है।

सामान्यतौर पर सिंह, तुला व धनु राशि में जन्मे व्यक्ति में जीवनी शक्ति भरपूर पायी जाती है। साथ ही कर्क, मकर व वृश्चिक राशि में जन्मे लोगों में खासतौर बचपन में जीवनी शक्ति कमजोर होती है पर जैसे-जैसे ये बड़े होते जाते हैं, बढ़ती जाती है।

किसी भी जन्म चक्र में लग्न (प्रथम भाव), पांचवें और ग्यारहवें भाव स्वास्थ्य कारक होते हैं तथा संकट की हर घड़ी में इलाज उपलब्ध कराते हैं। इसके ठीक विपरीत चौथे, आठवें, बारहवें भाव भारी दुख, बड़े रोग, मृत्यु, हानि और खर्च के कारक होते हैं, जबकि छठा भाव रोग का होता है। जिस जन्मचक्र में लग्न, पंचम, ग्यारहवां भाव स्वस्थ, उनके स्वामी सही स्थिति में हों उसे आमतौर पर रोग नहीं होते, बशर्ते चौथे, छठे, आठवें और बारहवें भाव में बैठे ग्रह और भाव स्वामी बेहतर स्थिति दर्शा रहे हों। यदि उपरोक्त दोनों ही अस्वस्थ अवस्था में हैं तो बचपन में भी भारी संकट आ सकता है। यदि खराब योग भी है व अच्छे योग भी हैं तो परेशानी/बीमारी/दुर्घटना आयेगी, लेकिन यथासमय उचित उपचार भी मिल जायेगा।

जन्म चक्र में लग्न, पांचवां, ग्यारहवां (कुछ को छोड़कर नौवां) भाव इलाज के होते हैं। इलाज की कौन-सी पद्धति आपको लाभ देगी यह इन भावों को प्रभावित करने वाले ग्रहों पर निर्भर है। इन भावों से यदि नेप्च्यून- शनि है तो होम्योपैथी + योगासन, ध्यान; शनि है तो प्राकृतिक चिकित्सा, योगासन, ध्यान, जपतप; शनि+बृहस्पति है तो आयुर्वेद, यदि बृहस्पति है तो एलोपैथी- फिजीशियन; यदि बृहस्पति-मंगल है तो सर्जरी के साथ एलोपैथी से लाभ होगा। यदि यूरेनस का प्रभाव है तो रेडियेशन/सिंकाई से लाभ, यदि सूर्य है तो लेसर थेरेपी से लाभ होगा। लाभ कब तक नहीं होगा, कब से होना शुरू होगा, कितना होगा, होगा भी या नहीं होगा- यह जन्म चक्र में स्थित योगों व तत्कालिक गोचर फल व प्रोग्रेशन देखकर बताया जा सकता है।

सटीक भविष्यवाणी क्या पैथालाजिकल रिपोर्ट को भी झुठला सकती है। कृपया ध्यान दें कि जब हम डॉक्टर के पास बुखार, सिरदर्द आदि तकलीफों के इलाज के लिए जाते हैं, तो भी आजकल के ज्यादातर डॉक्टर टीएलसी, डीएलसी, हीमोग्लोबिन, पेशाब, थूक आदि की जांच करवाने को कहते हैं। किसी को फेफड़े में इन्फेक्शन है, तो सीने का एक्स-रे निकलवाया जाता है। इसी प्रकार और भी कई टेस्ट तजवीज किए जाते हैं। हालांकि डॉक्टरी किताबों में दिए गए लक्षणों की सूची के अनुसार 90 फीसदी मामलों में किसी भी जांच के बगैर बुखार जैसी शिकायतों को डायग्नोस किया जा सकता है। परन्तु डॉक्टर ऐसा नहीं करते। क्यों?

दरअसल डॉक्टर टेस्ट रिपोर्ट्स के जरिए बीमारी के बारे में पूर्णतया आश्वस्त होना चाहते हैं और रिपोर्ट्स देखकर उपयुक्त डायग्नोसिस हो जाता है। दूसरी तरफ लोग भी यही सोचते हैं कि सेहत हजार नियामत। चलो थोड़ा खर्च भी हो जाए तो कोई बात नहीं, तसल्लीबख्श इलाज तो हो जाएगा।

सही ज्योतिषी का चुनाव कैसे करें?

इसके लिए यहां बताई जा रही बातों का ध्यान रखें: कृष्णमूर्ति पद्धति से बनी जन्मकुंडली में जो समायोजन किए गये हैं, आपके ज्योतिषी ने उनका अपनी गणनाओं में प्रयोग किया है या समय बचाने के लिए कोई 'शार्ट कट' चुन लिया है; इस पर ध्यान देना सबसे ज्यादा जरूरी है। ज्योतिष जैसी महान विद्या का हर ज्योतिषी को सम्मान करना चाहिए। ज्योतिष का सही उपयोग करके अपने क्लाइंट को मार्गदर्शन देना ही ज्योतिषी का उद्देश्य होना चाहिए न कि उसे भयभीत करके उससे पैसे ऐंठने में लग जाना चाहिए। एक उदाहरण लें: आप किसी उफनती नदी में फंसे हैं। पानी गले तक आ पहुंचा है। स्थिति यह है कि अब डूबे कि तब डूबे! पानी कभी भी मुंह तक पहुंच सकता है। आप जीना चाहते हैं, परन्तु हिम्मत टूट रही है, मृत्यु सामने है। तभी कहीं से देवदूत की तरह प्रकट होकर एक मछेरा आकर बताता है कि थोड़ा पीछे हटकर बायें तरफ चार कदम चलो, वहां पानी में एक टीला है, उधर से दाहिने जाने पर पानी कम मिलेगा और नदी पार हो जाएगी। बस प्रत्येक ज्योतिषी का यही काम है, जो उस मछेरे ने किया- जीवन की आपाधापी में फंसे लोगों को सही मार्गदर्शन देना!

जाने-माने एस्ट्रोलॉजर अभय राज सोमवंशी के अनुसार एक अच्छे ज्योतिषी को शुद्ध विचारों वाला, होशियार, वीर, साहसी, समय और स्थान का जानकार, अहंकार विहीन, शांत और भक्त स्वभाव वाला,

अभय राज सोमवंशी

आपकी जानकारी के लिए बता दूं कि 1933 में प्रकाशित 958 पृष्ठ की 'एनसाइक्लोपीडिया ऑफ मेडिकल एस्ट्रोलॉजी' (लेखक: प्रसिद्ध अमेरिकन नैचरोपैथ और एस्ट्रोलॉजर हार्वर्ड लेस्ली कार्नेल) में ज्योतिष और स्वास्थ्य संबंधी कई रहस्यों को उजागर किया गया है। इस पुस्तक में दिए गए कई सिद्धांतों को मैंने और मेरे ज्योतिषी मित्र श्री अभय राज सोमवंशी ने कई मरीजों पर परखा और आश्चर्यजनक रूप से सही पाया। जन्म कुंडली और वर्तमान कुंडली सामने हो, तो उक्त किताब के द्वारा बिल्कुल स्पष्ट बताया जा सकता है कि रोग कब से शुरू हुआ? रोग के विस्तृत लक्षण क्या हैं? कारण क्या हैं? सही डायग्नोसिस कब तक होगा? होगा भी या यूं ही निदान की तलाश में इधर-उधर भटकते रहेंगे? इसमें कौन सी दवा (एलोपैथी, होमियोपैथी या अन्य कोई चमत्कारी इलाज) फायदा करेगी और उससे कब और कितना लाभ होगा? अगर जन्म कुंडली का समय सही है या सुधार के बाद सही कर लिया गया है, तो ये भविष्यवाणियां बहुत सटीक आती हैं। अगर कारण पता चल गया, तो दवा चुनना आसान हो जाता है। विस्तृत विवरण के लिए देखें : www.astrologyofindia.com

दुर्गणों से मुक्त तथा तत्काल बुद्धि से परिपूर्ण होना चाहिए। ऐसा इसलिए आवश्यक है, क्योंकि ज्योतिषी को जिस ज्योति की भाषा समझनी है वह ब्रह्मांड से आ रही है। जन्म कुंडली के सहारे यूं तो सभी ज्योतिषी सामान्य भविष्यवाणियां कर लेते हैं। जैसे-जातक की कद-काठी, रंग-रूप, विवाह, धन-संपत्ति, वाहन सुख आदि के बारे में आसानी से बाता देते हैं। परन्तु विशिष्ट प्रश्नों के उत्तर विशिष्ट गणनाएं करके ही दिए जा सकते हैं। इसे इस प्रकार समझें: जन्म के समय ब्रह्मांड से जो किरणें आ रही थीं, उनकी तुलना उस समय आने वाली किरणों से करें, जिस समय आपका इच्छित काम होने वाला हैं।

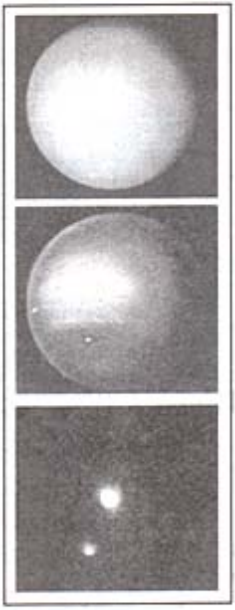

अगर ज्योतिषी ने सिर्फ कोई एक, तालमेल यानी कॉम्बिनेशन देखकर भविष्यवाणी की है और कुछ अन्य छोटे-छोटे कॉम्बिनेशन छोड़ दिए हैं, तो भविष्यवाणी गलत हो सकती है। इसलिए पूछे गए प्रश्न से संबंधित सभी कॉम्बिनेशन देखना आवश्यक हो जाता है। कभी कभी बहुत होशियार व्यक्ति का भी भाग्य खराब होता है और वह कुछ नहीं कर पाता। यह उसके पूर्व जन्मों का फल होता है। इस पर सहज ही एक प्रश्न पूछा जा सकता है कि अगर भाग्य अटल है, तो उसे सुधारने की कोशिश क्यों की जाए? कुछ घटनाएं बिना प्रयास के फल देती हैं; कुछ प्रयास के बाद फल देती हैं और कुछ घटनाएं एड़ी-चोटी का जोर लगाने पर भी फल नहीं देतीं। ज्योतिष से यकीनन यह पता चल सकता है कि अमुक बीमारी अपने आप ठीक हो जाएगी, प्रयास करने से ठीक होगी या अथक प्रयासों के बाद भी ठीक नहीं होगी। ज्योतिष से यह जानकारी होने पर सही दिशा में सही वक्त पर प्रयास किये जा सकते हैं। इस तरह कम मेहनत और खर्च में सही निर्णय ले सकते हैं। जन्मकुंडली के छठे और आठवे स्थान से मृत्यु का पता चलता है। छठे, आठवें और बारहवें स्थान पर कोई भी ग्रह प्रायः अशुभ फल ही देता है। छठे स्थान का स्वामी अगर मंगल, सूर्य, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु के साथ युति करते हुए आठवे स्थान में बैठ रहा हो, तो क्रमशः गला, मस्तक, हृदय, पेट, आंखों के नीचे, पैर और मुख पर घाव या फोड़े-फुन्सी की शिकायत होती है। बीमारी का कारण और बीमारी किस उम्र में होगी; ऐसी बातें जन्म कुंडली से स्पष्ट पता चल जाती हैं।

मेरे इस लेख का उद्देश्य अपने पाठकों को ज्योतिष की शक्ति से परिचित कराना था। अब मैं कुछ सामान्य बीमारियों की चर्चा करूंगा:

1. डिप्रेशन : अगर चंद्रमा या लग्न के साथ शनि हो या इन पर शनि की अशुभ दृष्टि हो, तो डिप्रेशन होता है। शनि के साथ राहु होने पर तो उलझन बहुत ज्यादा बढ़ जाती है, जो लाइलाज भी हो सकती है।

2. सिरदर्द : सिरदर्द का कारक मेष राशि और मंगल है। लग्न के मंगल के प्रभाव में आने पर सिरदर्द हो सकता है। मंगल के साथ राहु-केतु या शनि का ताल्लुक भी सिरदर्द देता है। मंगल के साथ स्थिर राशि में होने पर सिरदर्द लम्बे समय तक बना रहता है।

3. पेटदर्द : आमतौर से पेट का दर्द पाचन संबंधी गड़बड़ी से होता है। चन्द्रमा के राहु या केतु से पीड़ित होने पर पेट में गैस बनती है, जिससे दर्द होता है।

4. बच्चे का बौद्धिक स्तर (आई. क्यू.) तो उच्च रहना परन्तु परीक्षा में उच्च अंक प्राप्त न कर पाना : ऐसे मामलों में अक्सर माता-पिता को संदेह रहता है कि बच्चा या तो मेहनत ही नहीं करता; करता भी है तो सही दिशा में नहीं करता। इसीलिए परीक्षा में संतुष्टिपूर्ण अंक नहीं ला पाता। ऐसा भी हो सकता है कि बच्चे का भविष्य अति उज्ज्वल हो, जिसमें फिलहाल कम अंक आने का कोई रोल ही न हो। बुध या चन्द्रमा पर शनि की दृष्टि हो या जन्म के समय बुध वक्री हो। जब प्रोग्रेशन चार्ट (एक-एक साल आगे बढाने वाला) में यह मार्गी (Direct) हो जाएगा तब अंक अच्छे आने लगेगें। ध्यान दें तो आपको अपने आसपास ऐसे कई लोग मिलेंगे, जो अभी तो समृद्ध हैं परन्तु, अपने छात्र जीवन में उनकी गिनती होनहार छात्रों में नहीं होती थी।

5. बच्चा खाना ठीक से नहीं खाता : यह जान लीजिए कि वृष, वृश्चिक एवं कुंभ राशि के लोग घर का खाना पसन्द करते हैं। मेष, कर्क, मकर और मीन राशि के लोग तरह-तरह का खाना और जंक फूड पसन्द करते हैं। वे स्वाद के पीछे भागते हैं। धनु, सिंह और तुला राशि वालों को दोनों तालमेल वाला खाना पसंद आता है।

अगर आप कभी-कभी थकान और कमजोरी महसूस करते हैं और कोई डॉक्टर आपकी परेशानी नहीं समझ पा रहा है, तो चिन्ता की बात नहीं है। ज्योतिषी बताएगा कि आपकी समस्या सीरियस है भी या नहीं। अगर सीरियस है तो आगे चलकर कहीं यह किडनी, मस्तिष्क, लीवर या हृदय को तो प्रभावित नहीं करेगी? यदि हां तो कितना और क्या समय रहते इसका इलाज सम्भव है।

आपका जीवनसाथी आपकी बात नहीं सुनता। बच्चों को लगता है कि आप पुराने विचारों के हैं। इन्ही के तनाव में आकर आप ब्लडप्रेशर, डिप्रेशन एवं अन्य मानसिक-शारीरिक बीमारियां मोल ले लेते हैं। अगर ज्योतिष के जरिए आपको यह पता चल जाए कि स्थिति में बदलाव नहीं आने वाला है, तो आप यथा स्थिति को स्वीकार कर लीजिए। ध्यान रखिए, कि आज की बहुत सी बीमारियों की जड़ मानसिक तनाव है और इसका कारण है मरीज का यह सोचना कि 'फलां (पति/पत्नी/बेटा/बेटी/सास/बहू/मित्र आदि) मेरी मर्जी से काम क्यों नहीं करता?' जरा सोचिए, जो लोग अपनी मर्जी से काम कर रहे हैं वे अपने आप में सुखी हैं। फिर आप क्यों उनकी समस्या अपने दिल पर लेकर अपना ब्लड प्रेशर बढ़ाते हैं? जन्म कुंडली से यह स्पष्ट होने पर कि अपनी जिंदगी में तनाव के बाहरी कारण को आप कम या खत्म नहीं कर पाएंगे; आपकी सारी परेशानी दूर हो जाएगी। आप हालात से समझौता करना सीख लंगे। नतीजा, आप गुस्सा, तनाव, डिप्रेशन आदि मानसिक विकारों पर काबू पाने में सफल रहेंगे, वह भी बिना किसी दवाई के।

- डॉ. पीयूष सक्सेना

पीएच. डी. (नैचुरोपैथी)

(लेखक ने भारतीय और विदेशी प्राकृतिक चिकित्सा विधियों पर काफी अध्ययन और प्रयोग किये हैं)

(अगले अंक में : व्रत-उपवास क्यों करें? भारतीय उपवास पद्धति वजन बढ़ाती है या घटाती है? उपवास का सही तरीका क्या है? आदि)